कक्षा 12 – खंडकाव्य

सभी+खंडकाव्य

80 शब्दों में महामैराथन क्लास

क्र0सं0	पुस्तक तथा लेखक	प्रकाशक	अनुदानित जिले
1	मुक्ति यज्ञ–लेखक– श्री सुमित्रा नन्दन पन्त	राधा कृष्ण प्रकाशन 2, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली	कानपुर, जौनपुर, मुरादाबाद, फैजाबाद, एटा, ललितपुर।
2	सत्य की जीत–लेखक– श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी	ज्वाला प्रसाद विद्या सागर, 129, के0पी0 कक्कड़ रोड, प्रयागराज।	लखनऊ, इटावा, बलिया, विजनौर, झांसी, बदायूँ, प्रतापगढ़, रामपुर, पीलीभीत।
3	रश्मि रथी लेखक– रामधारी सिंह "दिनकर"	उदयांचल, पटना, वितरक–लोक भारती 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज।	वाराणसी, बुलन्दशहर, मथुरा, मुजफ्फरनगर, फतेहपुर, उन्नाव, देवरिया।
4	आलोकवृत्त लेखक– श्री गुलाब खण्डेवाल	कमल प्रकाशन, 105 मुकुन्दीगंज, प्रतापगढ़।	प्रयागराज, अलीगढ़, सहारनपुर, फर्रूखाबाद, मैनपुरी, मिर्जापुर, सीतापुर।
5	त्याग पथी लेखक– श्री रामेश्वर शुक्ल "अंचल"	साहित्यकार संघ, दारागंज, प्रयागराज।	आगरा, गोरखपुर, गाजीपुर, बरेली, सुल्तानपुर, जालौन, लखीमपुर खीरी, गोण्डा, शाहजहांपुर, बाराबंकी।
6	श्रवण कुमार लेखक– श्री शिव बालक शुक्ल	गौतम बन्धु गोइन रोड, लखनऊ	मेरठ, आजमगढ़, बस्ती, रायबरेली, हरदोई, बांदा, बहराइच, हमीरपुर।
	नोटः–इसके अतिरिक्त अन्य	जिलों/नवसृजित जिलों में खण्ड काव्य	पूर्व की भांति यथावत् पढ़ाये जायेंगे।

1. मुक्तियज्ञ

किन जनपदों के बच्चों के लिए है?

कानपुर, फैजाबाद, एटा, जौनपुर, मुरादाबाद, ललितपुर जनपदों हेतु निर्धारित है।

खंडकाव्य का सारांश

- मुक्तियज्ञ खंडकाव्य सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखित 'लोकायतन' महाकाव्य का एक अंश है। इस खंडकाव्य का सारांश इस प्रकार है-
- अंग्रेजों ने भारतीयों को और परेशान करने के लिए नमक कानून बनाया। अंग्रेजों के इस काले कानून को तोड़ने के लिए गाँधी जी ने डांडी यात्रा की। इस यात्रा में 24 दिन लगे। हांडी गांव पहुंचकर गाँधी जी ने समुद्र तट पर नमक बनाया और कानून को तोड़ा।
- यह आन्दोलन सत्य और अहिंसा पर आधारित या किन्तु अँग्रेजों ने कठोरता से सत्याग्रहियों का दमन किया। देश के अनेक नेताओं को जेल में डाल दिया गया। सम्पूर्ण देशवासी एक होकर गाँधी जी के पीछे चल पड़े। गाँधी जी ने जेल में ही आमरण अनशन कर दिया।

- गाँधी जी ने सन् 1942 ई० में 'अंग्रेजो, भारत छोड़ों का नारा लगाया। सारे देश में क्रान्ति की आग धधक उठी। सभी बड़े नेताओं सहित गाँधी जी को उसी रात्रि को बन्दी बना लिया गया। अंग्रेजों का दमनचक्र चरम सीमा पर पहुँच गया। अत्याचारों ने भारतीयों के आक्रोश की अग्नि में थी का काम किया। चारों ओर हड़ताल, तालाबन्दी हो गयी। गाँधी जी की धर्मपत्नी का जेल में ही स्वर्गवास हो गया।
- गाँधी जी की धर्मपत्नी के स्वर्गवास की घटना से सम्पूर्ण देश में अंग्रेजों के विरुद्ध हिंसा भड़क उठी। अंग्रेज भारत छोड़ने के लिए विवश हो गये। 15 अगस्त 1947 ई० को देश आजाद हो गया लेकिन जाते-जाते अंग्रेज भारत को विभाजित कर गये।
- सारे देश में स्वतन्त्रता के उत्सव मनाये जा रहे थे परन्तु उसी समय नौजाखाली में साम्प्रदायिक दंगा हो गया। इस घटना से गाँधी जी बहुत दुःखी हो गये। उन्होंने उपवास कर

दिया। 30 जनवरी 1948 ई० को दुष्ट नाथूराम गोडसे ने गोली मार कर गाँधी जी की हत्या कर दी। देश की एकता की कामना के साथ काव्य का अन्त हो जाता है।

(नायक) महात्मा गाँधी जी का चरित्र चित्रण

मुक्तियज्ञ खण्डकाव्य सुमित्रानंदन पन्त जी द्वारा रचित लोकायतन महाकाव्य का एक अंश है। इसके नायक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी है। गाँधी जी के चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ है-

सच्चे व महान जननेता- महात्मा गाँधी भारतीय जनता के सच्चे नेता हैं। भारत के जन-मन पर उनका पूर्ण अधिकार है। इसी महान नेता के नेतृत्व में स्वतन्त्रता का संग्राम लड़ा जाता है और अंग्रेजों को भारत से निकाल दिया जाता है।

सत्य व अहिंसा के पुजारी- गाँधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी हैं। उन्होंने सत्य और अहिंसा का अभिनव प्रयोग किया और सिद्ध कर दिया कि बिना रक्तपात के अहिंसा के बल पर भी बड़े से बड़े शत्रु को पराजित किया।

दृढ़ व अत्यन्त साहसी - महात्मा गाँधी अपने संकल्प पर दृढ़ और अत्यन्त साहसी थे। बड़ी-से-बड़ी कठिनाई का भी वे बड़े साहस से सामना करते थे। अँग्रेजी शासन के नमक कानून को तोड़ने में गाँधी जी ने जिस अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया, उससे अत्याचारी अँग्रेजों के भी छक्के छूट गये।

समदृष्टा व छुवाछूत के विरोधी - गाँधी जी सबको समान दृष्टि से देखते थे। उनकी दृष्टि में न कोई बड़ा था, न छोटा। छुआछूत को वे समाज का कलंक समझते थे। उनकी दृष्टि में कोई अछूत नहीं था।

मानवीय गुणों से युक्त- गाँधी जी युगपुरुष महान नेता थे। उनमें दया, करुणा, त्याग, इन्द्रिय संयम, प्रेम आदि सभी मानवीय गुणों का अद्भुत संगम था। उन्हें मानवमात्र से प्रेम था। 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श उनके जीवन में चरितार्थ होता था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गाँधी जी मानवीय गुणों से युक्त महामानव थे। वे विश्व की मानव जाति हेतु गौरव, राष्ट्रनायक व राष्ट्रपिता थे।

2. रश्मिरथी

निम्न जनपदों के छात्रों के लिए है-

वाराणसी, बुलंदशहर, मथुरा,
मुजफ्फरनगर, फतेहपुर, उन्नाव, देवरिया
जनपदों हेतु निर्धारित है।

रश्मिरथी सारांश

रश्मिरथी दिनकर जी द्वारा रचित महाभारत पर आधारित ओजस्वी खण्डकाव्य है। इसकी सम्पूर्ण काव्य सात खण्डों में विभाजित है। प्रथम सर्ग की कथा इस प्रकार है-

कर्ण का जन्म- कवि मानव तेज में अग्नि की स्तुति कर कर्ण के जन्म की घटना का वर्णन करता है। तेज की साज्ञात मूर्ति महान बीर कर्ण का जन्म कुन्ती की कुमारावस्था में सूर्य के वरदान से हुआ था। लोकापवाद के भय से कुन्ती ने इस शिशु को नदी में बहा दिया। वहाँ से वह दुर्योधन के सारथी अधिरथ को मिल गया। अधिरथ और उसकी पत्नी राधा ने ही इस शिजू का पालन किया इसलिएसमाज में वह सूत-पुत्र, अधिरथ सुत एवं राधेय नाम से ही जाना जाता है। अत्यन्त शूरवीर, सहदय, शीलवान, पौरुषवान तथा शस्त्र एवं शास्त्र विद्या में पारंगत होते हुए भी कर्ण को सूतकुल में जन्म लेने के कारण जीवनभर भारी यातनाएं सहनी पड़ीं।

कर्ण का रणकौशल-कर्ण के रणकौशल का प्रदर्शन उस समय हुआ जब एक दिन वह अचानक उस उत्सव में पहुँच जाता है जो द्रोणाचार्य द्वारा अपने शिष्यों की शास्त्र-विद्या का प्रदर्शन करने के लिए आयोजित किया गया था। इस उत्सव में अनेक राजकुमारों ने शस्त्र-विद्या का प्रदर्शन कर दर्शकों को मुग्ध किया था। अर्जुन ने तो एक समाँ ही बाँध दिया। उसी समय कर्ण ने अचानक अर्जुन को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारा-

आँख खोल कर देख कर्ण के हाथों का व्यापार।
फूले सस्ता सुयश देखकर, उस नर को धिक्कार ।।"

कर्ण के अपूर्व रणकौशल को देखकर लोग चकित हो गये। यहाँ भी कर्ण का सूतकुल में जन्म उसकी यातना का कारण बना। कृपाचार्य कह देते हैं कि राजपुत्र अर्जुन से बराबरी करने के लिए पहले उसे किसी देश का राज्य अर्जित करना होगा।

दुर्योधन से मित्रता- कर्ण के अपूर्व बल, शस्त्र-कौशल आदि गुणों को देखकर दुर्योधन कर्ण से बहुत प्रभावित हुआ। उसने

खड़े होकर कर्ण को अंगदेश का राजा घोषित कर दिया और अपने सिर से उतार कर मुकुट उसके सिर पर रख दिया। दूर्योधन की इस उदारता से कर्ण पुलकित हो उठता है, वह दुर्योधन को अपनी भुजाओं में भर लेता है और सदा-सदा के लिए उसका हो जाता है-

"बीर बन्धु ! हम हुए आज से एक प्राण दो देह।"

यहीं से कर्ण और दुर्योधन की गादी मित्रता का सूत्रपात होता है और यहीं से उसके हृदय में द्रोण के शिष्य अर्जुन के प्रति बैर का अंकुर पैदा हो जाता है।

उत्सव की समाप्ति- विवाद की स्थिति में ही उत्सव समाप्त हुआ। कौरव अंगेश कर्ण को साथ लेकर जयगान करते हुए अपने महल की ओर चल दिये। कुन्ती की विचित्र दशा थी। इस दृश्य को देखकर वह कर्ण के जन्म की घटना का स्मरण कर मन मसोस कर रह जाती है-जैसे वह दाँव हार गयी हो।

कर्ण का चरित्र-चित्रण

महाभारत काल का अप्रतिम योद्धा, कुन्ती की दिव्य सन्तान, महान दानवीर कर्ण 'रश्मिरथी' काव्य का नायक है। कर्ण की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

वर्ण-भेद तथा कुल-भेद का शिकार- कर्ण उच्चकुलीन अनेक श्रेष्ठ गुणों का भण्डार तथा प्रशंसित वीर था किन्तु समाज क़ी जाति-भेद, कुलीनता आदि की परम्पराओं के कारण उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसके जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना ही यह रही कि प्रत्येक अवसर पर उसका तिरस्कार इसलिए हुआ कि वह राजपुत्र क्षत्रिय नहीं है, और परशुराम से शाप इसलिए मिला कि वह ब्राह्मण नहीं, क्षत्रिय है।

अत्यन्त तेजस्वी तथा शौर्य की प्रतिमा- सूर्य का पुत्र कर्ण सूर्य के समान ही तेजस्वी तथा शौर्य की प्रतिमा है। उसके शरीर पर जन्मजात कंवच और कुण्डल अलौकिक आभा दिखाते हैं। भीष्म पितामह कर्ण को अर्जुन के समान धनुर्धारी तथा श्रीकृष्ण के समान योद्धा मानते हैं।

दृढ़ प्रतिज्ञ तथा वचन का पक्का - कर्ण जो प्रतिज्ञा करता है, उसका दृढ़ता से पालन भी करता है। वह दुर्योधन को एक बार उसकी सहायता का वचन दे देता है और प्राण देकर भी उस वचन का पालन करता है। कर्ण ने कुन्ती को वचन दिया था कि वह युद्ध में अर्जुन को छोड़ किसी अन्य पाण्डव को नहीं मारेगा, इस वचन का भी वह मृत्युपर्यन्त पालन करता है।

सच्चा मित्र- कर्ण एक सच्चा मित्र है। वह एक बार दुर्योधन से मित्रता करता है और फिर अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उस मित्रता का पालन करता है। राज्य का लोभ और माता का प्यार भी

उसकी मित्रता को डिगाने में समर्थ नहीं हो पाता। धरती का राज्य तो क्या, स्वर्ग के राज्य और बैकुण्ठ को भी वह मित्रता पर न्यौछावर कर सकता है।

श्रद्धालु गुरु- भक्त-कर्ण के चरित्र में श्रद्धालु गुरु-भक्त शिष्य का गुण भी पाया जाता है। वह अपने को ब्राह्मण कुमार बताकर परशुराम जी को गुरु बनाता है। उसकी श्रद्धा, विनय तथा गुरु-भक्ति से परशुराम जी अत्यन्त प्रसन्न हैं। कर्ण की श्रद्धा, प्रेम, विनय और गुरु-भक्ति के कारण परशुराम जी उससे पुत्र से भी अधिक स्नेह करते हैं।

कृतज्ञ- कर्ण का चरित्र कृतज्ञता से परिपूर्ण है। उसकी माता कुन्ती है फिर भी वह राधा के उपकार को नहीं भुलाता है जिसने उसका पालन-पोषण किया था।

इस प्रकार कर्ण का चरित्र सर्वथा सजीव और मानवीय है। वास्तव में वह एक धीर, वीर, गम्भीर, आदर्श महापुरुष है।

3. सत्य की जीत

निम्न जनपदों के छात्रों के लिए है

इटावा, बलिया, लखनऊ, प्रतापगढ़, रामपुर, पीलीभीत, झाँसी, बिजनौर जनपदों हेतु निर्धारित है।

खण्डकाव्य का सारांश

सत्य की जीत खण्डकाव्य की कथा महाभारत की अत्यन्त मार्मिक घटना है। युधिष्ठिर कौरवों के साथ खेले गये जुए में अपना सर्वस्व हार चुकने के बाद द्रौपदी को भी हार जाते हैं। दुर्योधन भरी सभा में द्रौपदी को नग्न कर अपमानित करना चाहता है। दुःशासन द्रौपदी को केश पकड़कर बींचते हुए दरबार में लाता है। द्रौपदी इस अपमान से पीड़ित होकर सिंहनी के समान गरजती हुई तथा दुःशासन को ललकारती है जिसे देखकर सभी सभासद स्तब्ध रह जाते हैं।

द्रौपदी नारी वर्ग पर पुरुष वर्ग के अत्याचार का वर्णन करती है जिसे सुनकर दुःशासन का अहंभाव जागृत हो उठता है। यह काव्य नारी की निर्बलता, पुरुषाश्रितता तथा तुच्छता का स्वरूप उपस्थित करता है। द्रौपदी दुःशासन को नारी की क्रोधाग्नि में न पड़ने के लिए संकेत करती है कि नारी अवसर आने पर काली का रूप धारण कर अन्याय तथा राक्षसी प्रवृत्ति का विनाश करती है। बहुत समय तक दोनों में सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय आदि विषयों पर विवाद होता है।

द्रौपदी सभा में उपस्थित सभी प्रतापी, नीतिज्ञ एवं शास्त्रज्ञ जनों से पूछती है कि स्वयं को पहले जुए में हार चुके युधिष्ठिर को मुझे दांव पर लगाने का अधिकार था ! द्रौपदी के तर्क से सभी प्रभावित होते हैं। भीष्म पितामह निर्णय का भार धृतराष्ट्र को सौंप कर मौन हो जाते हैं।

भीष्म पितामह के वचनों को सुनकर द्रौपदी कहती है कि सरल हृदय युधिष्ठिर कुचालों से छले गये। दुःशासन कहता है कि हमें धर्म और सत्य की तनिक भी चिन्ता नहीं है। हम शस्त्रबल पर विश्वास करते हैं न कि शास्त्रबल पर। विकर्ण दुःशासन की नीति का विरोध करता है। विकर्ण की न्यायसंगत बातें सुनकर सभी सभासद शकुनि तथा दुःशासन की निन्दा करने लगते हैं। कर्ण पाण्डवों को वस्त्र उत्तारने का आदेश देता है। युधिष्ठिर सहित सभी पाण्डव स्वयं सहर्ष अपने वस्त्र उतार देते हैं।

दुःशासन इस दृश्य पर अट्टहास करता हुआ द्रौपदी का चीर खींचने के लिए हाथ बढ़ाता है। द्रौपदी निर्भयतापूर्वक कहती है कि मैं अधर्म से जीती गयी अपने को विजित नहीं मानती।

इसलिए मेरे प्राण भले ही चले जायें परन्तु मेरा वस्त्र शरीर से अलग नहीं होगा। मदान्ध दुःशासन अपना हाथ द्रौपदी की ओर बढ़ाता है। द्रौपदी के भयंकर रूप को देखकर उसका पौरुष क्षीण हो जाता है।

इस दृश्य को देखकर सभी सभासद कौरवों की निन्दा करते हैं। सब सभासद कौरवों की निन्दा करते हुए द्रौपदी के पक्ष का समर्थन करते हैं। अन्त में धृतराष्ट्र सत्य, धर्म और न्याय के मार्ग पर चलने वाले पाण्डवों की प्रशंसा करते हुए दुर्योधन को आदेश देते हैं कि पाण्डवों को मुक्त करके उनका राज्य उन्हें वापस लौटा दिया जाये। धृतराष्ट्र द्रौपदी के विचारों का समर्थन करते हुए उसके प्रति किये गये अपमानजनक व्यवहार के लिए क्षमायाचना करते हैं। नारी की महत्ता, स्वार्थ, त्याग, नैतिक मूल्य स्थापना, निरंकुशता पर अंकुश, विश्वबन्धुत्व की भावना, जियो और जीने दो,आदि आदर्श एवं उदात्त भावों से परिपूर्ण कथावस्तु को माहेश्वरी जी ने अद्वितीय ढंग से प्रस्तुत किया है।

4. त्यागपथी

किन जनपदों के बच्चों के लिए है?

आगरा, गोरखपुर, गाजीपुर, सुल्तानपुर, जालौन, बरेली, लखीमपुर खीरी, गोंडा, शाहजहाँपुर , बाराबंकी, फिरोजाबाद, महाराजगंज जनपदों हेतु निर्धारित है।

खंडकाव्य का सारांश

'त्यागपथी' श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' द्वारा रचित श्रेष्ठ खण्डकाव्य है। इस काव्य की कथा ऐतिहासिक है जो पाँच सर्गों में विभाजित है। इसमें हर्ष के शासनकाल में भारतवर्ष की स्थिति का सटीक वर्ण है। कथा का सार इस प्रकार है-

प्रथम सर्ग की कथा -हर्षवर्धन वन में आखेट के लिए जाते हैं। उन्हें वन में ही समाचार मिलता है कि उनके पिता महाराज प्रभाकरवर्धन को तेज ज्वर-प्रदाह है। राजकुमार तुरन्त वापस घर आते हैं और पिता का बहुत उपचार करते हैं किन्तु पिता स्वस्थ नहीं हो पाते। उस समय हर्षवर्धन के बड़े भाई राज्यवर्धन उत्तरापथ में हूणों से युद्ध में लगे हुए थे। हर्षवर्धन ने दूत के द्वारा राज्यवर्धन के पास पिता की बीमारी का समाचार पहुँचाया। हर्षवर्धन की माता पति की बिगड़ती दशा को देखकर आत्मदाह के लिए तैयार हो जाती हैं। हर्षवर्धन माता को बहुत समझाता है किन्तु वे नहीं मानतीं और पति की

मृत्यु से पूर्व ही आत्मदाह कर लेती हैं। कुछ समय पश्चात महाराज प्रभाकरवर्धन भी स्वर्ग सिधार जाते हैं। पिता का अन्तिम संस्कार कर हर्षवर्धन महल में लौटकर आते हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता है कि पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर उनके भाई राज्यवर्धन तथा बहिन राज्यश्री की क्या दशा होगी !

द्वितीय सर्ग की कथा -उधर राज्यवर्धन हूणों को हराकर सकुशल सेना सहित अपने नगर में वापस आते हैं। वे माता-पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर शोकाकुल हो उठते हैं और वैराग्य लेने का निश्चय कर लेते हैं। किन्तु उन्हें उसी समय समाचार मिलता है कि मालवराज ने उनकी बहिन राज्यश्री के पति गृहवर्मन का वध कर दिया है और राज्यश्री को कारागार में डाल दिया है। समाचार पाते ही राज्यवर्धन वैराग्य की बात भूलकर मालवराज का वध कर अपनी बहिन की रक्षा के लिए चल देते हैं। मार्ग में गौड़ नरेश से उनका युद्ध होता है। गौड़ नरेश को राज्यवर्धन पराजित कर देते हैं किन्तु गौड़ नरेश छल करके राज्यवर्धन का वध करा देते हैं। हर्षवर्धन को भाई की मृत्यु का समाचार मिलता है।

वे एकदम विशाल सेना लेकर मालवराज पर आक्रमण करने के लिए चल देते हैं। उन्हें मार्ग में समाचार मिलता है कि राज्यश्री कारागार से निकलकर विन्ध्याचल के वन की ओर निकल गयी है। हर्षवर्धन भी युद्ध की बात छोड़कर बहिन को खोजने के लिए वन की ओर चल पड़ते हैं। वन में वे दिवाकरमित्र के आश्रम में पहुँचते हैं। वहाँ उन्हें समाचार मिलता है कि राज्यश्री आत्मदाह करने ही वाली है। हर्षवर्धन तत्काल उस स्थान पर पहुँचते हैं और अपनी बहिन राज्यश्री को आत्मदाह से बचा लेते हैं। तत्पश्चात वे दिवाकरमित्र और राज्ययी को साथ लेकर कन्नौज की ओर चल देते हैं।

तृतीय सर्ग की कथा- हर्षवर्धन अपनी विशाल सेना के साथ कन्नौज पर आक्रमण कर देते हैं और अपनी बहिन के राज्य पर अनीतिपूर्वक अधिकार जमाने वाले मालवराज से बदला चुकाना चाहते हैं किन्तु मालवराज भागकर अपने प्राण बचा लेता है। राज्यवर्धन की हत्या करने वाला गौड़ नरेश शशांक भी गौड़ देश की ओर भाग जाता है। हर्षवर्धन की विजय होती है। सभी लोग हर्षवर्धन से

प्रार्थना करते हैं कि वह कन्नौज की गद्दी पर बैठें, परन्तु हर्ष अपनी बहिन का राज्य लेने को तैयार नहीं होते। वे अपनी बहिन से अनुरोध करते हैं कि वह सिंहासन पर बैठे किन्तु राज्यश्री भी सिंहासन पर बैठने से मना कर देती है। अन्त में हर्षवर्धन कन्नौज के संरक्षक बन जाते हैं और वह राज्यश्री के नाम पर ही शासन का संचालन करते हैं।

इसके पश्चात हर्षवर्धन दिग्विजय करते हैं। 6 वर्ष की कालावधि में वे कश्मीर, पंचनद, सारस्वत, मिथिला, उत्कल, गौड़, नेपाल, बल्लभी, सोरठ सभी राज्यों को जीतकर एक विशाल सुसंगठित राज्य की स्थापना करते हैं। वे थानेश्वर के स्थान पर कन्नौज को अपनी राजधानी बनाते हैं और अनेक वर्षों तक धर्म का राज्य करते हैं।

चतुर्थ सर्ग की कथा- राज्यश्री एक विशाल राज्य की शासिका है, वह फिर भी दुःखी है। उसके मन में वैराग्य की भावना जागृत हो जाती है, जिसके कारण वह सब सांसारिक सुखों को त्यागकर भिक्षुणी बनना चाहती है। वह हर्षवर्धन के पास जाती है और संन्यास ग्रहण करने की आज्ञा माँगती है। हर्षवर्धन राज्यश्री को समझाते हैं-तुम तो मन से संन्यासिनी ही हो, फिर भी यदि गेरुआ वस्त्र पहनना ही चाहती हो तो पहन लो। अपने वचन के अनुसार तुम्हारे साथ ही मैं भी संन्यास ग्रहण कर लूँगा। उसी समय दिवाकरमित्र वहाँ आ जाते हैं। वे हर्ष और राज्यश्री दोनों को समझाते हैं कि तुम दोनों भाई-बहिन मन से तो संन्यासी ही हो किन्तु शरीर से संन्यासी बनने और गृहत्याग की तुम्हें आवश्यकता नहीं है। देश की रक्षा और सेवा करना इस समय संन्यास ग्रहण करने की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है। दिवाकरमित्र के उपदेश से दोनों संन्यास का विचार छोड़ देते हैं और देशसेवा में लग जाते हैं।

पंचम सर्ग की कथा- हर्षवर्धन एक आदर्श सम्राट् के रूप में शासन करते हैं। उनके राज्य में सब ओर सुख और शान्ति की वर्षा होती है तथा विद्वानों की पूजा होती है। उनके राज्य में सभी लोग सदाचारी, धर्मपालक तथा सुरुचि सम्पन्न हैं। महाराज हर्षवर्धन सदा जनकल्याण की बात सोचते हैं। शास्त्र-चिन्तन ही उनका व्यसन है। अपने भाई के इस प्रकार के धर्मानुशासन को देखकर राज्यश्री भी प्रसन्न रहती है। उनका सम्पूर्ण राज्य एकता के सूत्र में बँधा है। एक बार हर्षवर्धन तीर्थराज प्रयाग जाते हैं और वहाँ वे अपना सम्पूर्ण राजकोष दान कर देते हैं, यहाँ तक कि वे अपने शरीर के वस्त्र भी दान कर देते हैं और तब अपनी बहिन से माँग कर वस्त्र पहनते हैं। इसके पश्चात वे हर पाँचवें वर्ष इसी प्रकार प्रयाग जाते और राजकोष में जितना धन होता, सारा दान कर देते हैं। इस दान को वे प्रजा-ऋण से मुक्ति का उपाय कहते हैं। वे अपने जीवन में 6 बार इस प्रकार के सर्वस्व दान का आयोजन करते

हैं। वे संसार भर में भारतीय संस्कृति का प्रसार करते हैं। इस प्रकार हर्षवर्धन का शासन सब प्रकार से सुखमय एवं शान्तिमय था। वे कर्तव्यपरायण, त्यागी, परोपकारी तथा परमवीर एवं प्रजा के शुभचिन्तक थे।

हर्षवर्धन की चारित्रिक विशेषताएँ

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के नायक हर्षवर्धन के चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं-

आदर्श पुत्र- हर्षवर्धन एक आदर्श पुत्र के रूप में हमारे सामने आते हैं। वे अपने पिता के रोगी होने का समाचार पाते ही आखेट छोड़कर तत्काल घर आते हैं और उनका उपचार करते हैं। माता के आत्मदाह की बात सुनकर वे विह्वल हो जाते हैं। आदर्श भाई- हर्षवर्धन आदर्श पुत्र होने के साथ आदर्श भाई हैं। बड़े भाई राज्यवर्धन व छोटी बहिन राज्यश्री से हर्षवर्धन को प्रगाढ़ प्रेम है।

महान योद्धा - हर्षवर्धन एक महान योद्धा थे। शत्रु उनके सामने ठहर नहीं पाता था। कन्नौज पर आक्रमण करके उन्होंने शशांक का वध किया। मालवराज ने भागकर प्राण बचाये। इस प्रकार उन्होंने अपनी बहिन के खोये हुए राज्य का पुनः उद्धार किया।

साम्राज्य के संस्थापक - हर्षवर्धन ने थानेश्वर और कन्नौज के शासन को स्थिर करने के पश्चात दिग्विजय की ओर उत्तर भारत के कई राज्यों को जीतकर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की और अनेक वर्षों तक धर्मपूर्वक शासन किया।

प्रजावत्सल - महाराज हर्षवर्धन एक योग्य शासक थे। वे अपनी प्रजा से पुत्रवत प्रेम करते हैं। प्रजा की भलाई में ही वे अपना सारा समय लगाते हैं। अपनी प्रजा के लिए ही उन्होंने अपना तन-मन-धन सव कुछ अर्पित कर दिया था।

महान दानी- 'त्यागपथी' का हर्षवर्धन आत्मसंयमी तथा महान दानी है। महान त्यागी होने के कारण ही कवि ने उसे 'त्यागपथी' नाम से पुकारा है। वे राजकोष को प्रजा की सम्पत्ति मानते हैं और उसे हर पाँचवें वर्ष प्रयाग में जाकर प्रजा के लिए ही दान कर देते हैं।

उदार चरित वाले- सम्राट हर्षवर्धन स्वभाव से बड़े उदार और दयालु हैं। वे मानव सेवा में अपना जीवन अर्पित कर देते हैं। वे सब धर्मों का समान आदर करते हैं। वे वैदिक धर्म के अनुयायी हैं किन्तु बौद्ध धर्म का भी समान आदर करते हैं। वे जीवन भर सदाचार का पालन करते हैं।

5. आलोकवृत्त

किन जनपदों के बच्चों के लिए है?

प्रयागराज, अलीगढ़, सहारनपुर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, मिर्जापुर, सीतापुर जनपदों हेतु निर्धारित है।

गाँधी जी का चरित्र-चित्रण

आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। उनके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

आरम्भिक जीवन में मानवीय दुर्बलताएँ - गाँधी जी आरम्भिक जीवन में एक सामान्य बालक थे। वे पढ़ने-लिखने में तीव्रबुद्धि नहीं थे। अनेक मानवोचित दुर्बलतायें जैसे मांस खाना, चोरी करना आदि उनमें विद्यमान थीं। बचपन में इन्होंने धूम्रपान और असत्य भाषण भी था। किन्तु कुछ समय बाद उन्हें अपनी भूलों पर आत्मग्लानि हुई। उन्होंने एक दिन अपने पिता के चरणों में बैठकर अपनी भूलों का चिट्ठा उनके सामने रखा। आँसुओं के जल से आत्मशुद्धि करके पिता का आशीर्वाद पाया और इन अवगुणों, से सदा के लिए किनारा कर लिया।

देशप्रेमी - 'आलोकवृत्त' के गाँधी जी देशप्रेमी हैं। वे देश को विदेशी शासन से मुक्त कराने का संकल्प लेते हैं। वे जेल की यातना सहते हैं और देश को स्वतन्त्र करवा कर ही दम लेते हैं।

सत्य और अहिंसा के उपासक- गाँधी जी सत्य और अहिंसा के पुजारी हैं। 'सत्य हरिश्चन्द्र' नाटक को पढ़कर उन्होंने हरिश्चन्द्र के समान सत्य का अनुयायी बनने का निश्चय किया था। हिंसा और असत्य से उन्हें घृणा थी। वे शारीरिक बल से अधिक महत्त्व आत्मिक बल को देते थे और अहिंसामय आत्मबल से पशुबल पर विजय प्राप्त करना चाहते थे।

महान उज्ज्वल चरित्र - गाँधी जी का व्यक्तित्व महान और उज्ज्वल था। उनका शरीर दुर्बल था किन्तु उसमें महान आत्मा निवास करती थी। अपने विशिष्ट गुणों के कारण ही उन्हें महामानव का पद प्राप्त हुआ था। वे मनुष्य होते हुए भी देवतुल्य थे। दुर्बल शरीर होते भी वे अजेय थे।

ईश्वर में विश्वास- गाँधी जी को ईश्वर की सत्ता पर अटूट विश्वास था। वे प्रत्येक कार्य को परमेश्वर का कार्य समझते थे और उसे ईश्वर को साक्षी मानकर पवित्र साधनों से करते थे।

ऊंच-नीच के विरोधी- गाँधी जी ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा, जाति-पांति के भेद को नहीं मानते थे। वे सबके लिए समानता के सिद्धान्त के अनुयायी थे। उन्होंने जीवनभर जाति-पाँति और रंगभेद का विरोध किया।

अत: गाँधी जी श्रेष्ठ, उच्चकुलीन, धीरोदात्त नायक हैं। उनमें श्रेष्ठ मानव के सभी गुण विद्यमान हैं। कवि को उनके चरित्राकंन में पूर्ण सफलता मिली है।

6. श्रवण कुमार

किन जनपदों के बच्चों के लिए है?

मेरठ, आजमगढ़, बस्ती, रायबरेली, हरदोई, बांदा, बहराइच, हमीरपुर जनपदों हेतु निर्धारित है।

श्रवण कुमार खंडकाव्य का सारांश

श्रवण कुमार खंडकाव्य डॉ. शिव बालक शुक्ल द्वारा रचित एक पौराणिक खंडकाव्य इसका सारांश इस प्रकार है-

- **प्रथम सर्ग के** प्रारंभ में अयोध्या का वर्णन किया गया है प्रथम सर्ग में ही राजा दशरथ शिकार की योजना बनाते हैं।
- **खंडकाव्य के** द्वितीय स्वर्ग में आश्रम का वर्णन किया गया है. जहां श्रवण कुमार एवं उनके अंधे माता-पिता शांत एवं सुख में जीवन बिता रहे हैं साथ ही पशु-पक्षियों एवं कीट-पतंगों की शत्रुहीनता का उल्लेख किया गया है।

- **तृतीय सर्ग में** आखेट का वर्णन किया गया है। महाराज दशरथ भोजन करने के पश्चात आखेट। का विचार करते हैं। रात्रि के चतुर्थ प्रहर में आखेट की इच्छा प्रकट की उन्होंने सपना देखा की एक हिरण का बच्चा उनके बाण से मर गया और हिरनी खड़ी आंसू बहा रही है। प्रातः होते ही राजा दशरथ शिकार के लिए चल पड़े और धनुष बाण संभाल कर जंगली पशुओं की प्रतीक्षा करने लगते हैं।
- **चतुर्थ सर्ग में** श्रवण कुमार का वर्णन किया गया है। माता-पिता को प्यास लगने के कारण श्रवण कुमार जल लेने नदी के तट पर गए। जल भरने के लिए खड़े को जैसे ही डुबोया। उसकी ध्वनि किसी वन्य पशु की आवाज समझ कर दशरथ ने शब्द बेधी बाण चला दिया बाण श्रवण कुमार को लगा और धरती पर गिर पड़े। दशरथ के बाण से घायल श्रवण नदी के

तट पर पड़ा था। माता-पिता की चिंता में व्याकुल और बिलख-बिलख कर कह रहा था कि मेरे असहाय अंधे माता-पिता का भविष्य क्या होगा।

- **पंचम सर्ग में** दशरथ के अंर्तगतों का चित्रण हुआ है, पश्चाताप करते हुए अपराध की गंभीरता और क्षमता पर विचार करते हुए श्रवण कुमार के आश्रम पर पहुंचते हैं।
- **षष्ठ सर्ग में** छठे सर्ग में श्रवण कुमार के वृद्ध माता-पिता की असहाय स्थिति तथा ममता भरे वात्सल्य का वर्णन है। श्रवण कुमार के माता-पिता श्रवण कुमार के आने की प्रतीक्षा में व्याकुल है। दशरथ के पैरों की आहट सुनकर वे कहते हैं कृपया जल दीजिए दशरथ जब जल देते हैं तो वह उनका परिचय पूछते हैं। साथ ही कहते हैं कि आपके शुभागमन से मेरा आश्रम पवित्र हो गया मेरा पुत्र भी जल लेकर आता ही होगा।

➢ **सप्तम सर्ग में** श्रवण कुमार के माता-पिता के द्वारा दिए गए अभिशाप का वर्णन है। करुण रस का परिपाक हुआ है। श्रवण कुमार के माता-पिता श्रवण कुमार की पूर्व स्मृतियों को दोहराकर करुण विलाप करते हैं कहते हैं कि है- पुत्र अब हमारे लिए जल कौन लाएगा। वृद्धता का सहारा कौन बनेगा। अंत में कुमार दशरथ को शाप देते हुए कहते हैं कि जो बबूल लगाएगा उसे आम कैसे मिल सकता है।

पुत्र शोक में कलप रहा हूं, जिस प्रकार में अज नंदन ।
सुत वियोग में प्राण तजोगे, इसी भांति करके क्रंदन।

शाप सुनकर माता दुखी होती हैं दशरथ तो कांप जाते हैं।

- **अष्टम सर्ग में** में अभिशप्त दशरथ दुखी है। सारथी भी शोक संतप्त है। पिता क्रोध के वशीभूत होकर दशरथ को श्राप देने के लिए पश्चाताप करते हैं। परंतु अब शाप निवारण के लिए कोई उपाय नहीं है। अंत में श्रवण दिव्य रूप में पिता को आश्वस्त करता है। साथ ही माता-पिता भी आवागमन के बंधनों से मुक्त हो जाते हैं। श्रवण कुमार स्वर्गलोक को चल पड़ता है। साथ ही श्रवण कुमार के माता-पिता सूत द्वारा निर्मित चिता पर प्राण दे देते हैं उनकी जीवात्मा ब्रह्म में लीन हो जाती है।
- **नवमसर्ग** उपसंहार सर्ग है उदास दशरथ सारथी के साथ अयोध्या लौट आते हैं। लोक अपवाद के भाई से यह घटना कोई किसी से नहीं कहता। किंतु राम वनगमन के समय मृत्यु के

कुछ पहले दशरथ को मुनि का शाप याद आता है और वह कौशल्या से कहकर अपने मन की व्यथा दूर कर देते हैं।

(नायक) श्रवण कुमार का चरित्र-चित्रण

श्रवण कुमार खण्डकाव्य में श्रवण कुमार मुख्य पात्र है। उसका चरित्र एक आदर्श बालक का चरित्र है। श्रवण कुमार के चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं-

शान्त-गम्भीर स्वभाव- श्रवण कुमार के माता-पिता तपस्वी हैं। आश्रम के शान्त और पवित्र वातावरण में उनका पालन- पोषण हुआ; अतः माता-पिता के संस्कारों और आश्रम के वातावरण का उसके जीवन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था।

आत्मज्ञानी- श्रवण कुमार अभी बालक ही है किन्तु माता-पिता के संस्कारों के कारण उसको आत्मज्ञान हो चुका है। वह मृत्यु की अनिवार्यता को समझता है।

पितृभक्त- श्रवण के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उसकी पितृभक्ति है। वह प्रातःकाल उठते ही बद्धा-भक्तिपूर्वक माता- पिता को प्रणाम कर उनकी सेवा में जुट जाता है। अपने माता-पिता से उसे प्राणों से भी अधिक प्रेम है। दशरथ के बाण से घायल होकर भी उसे अपने प्राणों की चिन्ता नहीं, चिन्ता इसकी है कि अब उसके माता-पिता की सेवा कौन करेगा। माता-पिता की सेवा और प्रसन्नता के लिए उसने अपना जीवन अर्पण कर दिया।

तपस्वी एवं ओजस्वी- श्रवण कुमार संयमी और तेजस्वी है। इसलिए मरते समय भी उसके शरीर से ऐसा तेज दिखाई पड़ता है जिससे उसके त्याग-तपस्या आदि गुण स्पष्ट हो जाते हैं।

कर्मवादी- श्रवण कुमार भाग्यवाद में विश्वास रखता है। भाग्यवादी होते हुए भी वह कर्म में विश्वास रखता है कि मनुष्य का छोटा-बड़ा अथवा ऊँच-नीच होना उसके कर्मों पर आधारित होना चाहिए। किसी विशेष कुल अथवा विशेष जाति में जन्म लेने से कोई बड़ा या छोटा नहीं माना जाना चाहिए। वर्णों और जातियों की व्यवस्था कर्म के आधार पर होनी चाहिए।

क्षमाशील- श्रवण क्षमाशील है। अपना बड़े से बड़ा अपकार करने वाले व्यक्ति को भी वह क्षमा कर देता है। दशरथ उसे बाण से घायल कर देता है तथापि वह दशरथ को क्षमा कर देता है।

सन्तोषी- श्रवण मुनि कुमार हैं। मुनियों के समान ही वह यथालाभ सन्तुष्ट रहता है। उसकी आवश्यकताएँ बहुत सीमित है। वह तिन्नी के चावलों से अपना निर्वाह कर लेता है। वल्कल वस्त्र पाकर उसे सुन्दर वस्त्रों की भी आवश्यकता नहीं है।